अबिनासीअ जो नासु, कड़ी कदाचित न थिए,
आहे जंहिंजे आसिरे, धरिती धवलु आकासु
सूरिजु चंदिरु पाणी पवनु, तेज पुंज परिकास,
बेहदि रचे बिलासु, सइल करे सामी चए.

सामीजी के शब्दों में, 'निर्गुण निराकार परब्रह्म अविनाशी है। परब्रह्म का अंत कभी नहीं होता क्योंकि वह अमर है। उसके आधार पर ही यह पृथ्वी एवं निर्मल आकाश टिका हुआ है। विशुद्ध ब्रह्म के ही आधार पर सूर्य, चंद्र, जल, वायु एवं तेज:पुंज प्रकाश टिका हुआ है। इस प्रकार अविनाशी परब्रह्म अत्यंत विलास/आमोद-प्रमोद रच कर क्रीड़ा कर रहा है।'

ज्ञानस्वरूप परब्रह्म अविनाशी अनंत, निर्विकार एवं सीमातीत है। इस सृष्टि में एक शुद्ध, नित्य एवं पूर्ण परब्रह्म के सिवाय अन्य किसी का सच्चा अस्तित्व नहीं है। जो कुछ है, वह परब्रह्म ही है। परब्रह्म में अनंत शक्तियाँ हैं। वे सभी ब्रह्मस्वरूप ही हैं। उन में से एक अद्‌भुत शक्ति के कारण 'अहं' पैदा हुआ। यही मूल माया है, जिससे गुणाया का जन्म हुआ। उसके सत्व, रज और तम नामक गुणों में से 'तम' नामक गुण से पृथ्वी, आप (जल), वायु, आकाश और तेज नामक पंचमहाभूत निर्माणु हुए। उन पंचमहाभूतों के मिश्रण से यह दृश्य विश्व निर्माण हुआ। जड़ एवं आकारमय तत्व '**पृथ्वी-तत्त्व**' है, जिसके आधार पर सभी प्राणी जीवित है। जलमय तत्व '**आप-तत्त्व**' है, जिसके आधार पर सभी प्राणी जीवित हैं। जलमय तत्त्व '**आप-तत्त्व**' हैं, जिस पर सभी प्राणियों का जीवन निर्भर है। जो प्रकाशमय है, वह '**तेज-तत्त्व**' है, जिसके कारण जीव जीवित रहते हैं। जिसके कारण गति एवं चेतना मिलती है, वह '**वायु-तत्त्व**' है। दसों दिशाओं में फैला हुआ रिक्त स्थान ही '**आकाश-तत्त्व**' है। आकाश ही पंच महाभूतों में मुख्य है, उस में से ही सभी भूत (जीव) निर्माण होते हैं। हर स्थान पर होना आकाश का गुण है। पंचमहाभूतों का 'पंचीकरण' हो कर यह दृश्य जगत निर्माण होता है। महाकवि सामीजी इन पंचमहाभूतों का निर्माण एवं आधार परब्रह्म को ही मानते हैं। उनकी यह मान्यता वेदांत के अनुसार ही है। सामीजी वेदांत की व्याख्या करने वाले कवि हैं। यह श्लोक इसी बात का प्रमाण है। परब्रह्म परम महान तत्त्व है।

■